--जय हनुमान ज्ञान गुन सागर जय कपीस तिहुँ लोक उजागर--

--राम दूत अतुलित बल धामा अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥१॥--

--महाबीर विक्रम बजरंगी कुमति निवार सुमति के संगी--

--कंचन बरन बिराज सुबेसा कानन कुंडल कुँचित केसा ॥२॥--

--हाथ बज्र अरु ध्वजा बिराजे काँधे मूँज जनेऊ साजे--

--शंकर सुवन केसरी नंदन तेज प्रताप महा जगवंदन ॥३॥--

--विद्यावान गुनी अति चातुर राम काज करिबे को आतुर--

--प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया राम लखन सीता मनबसिया ॥४॥--

--सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा बिकट रूप धरि लंक जरावा--

--भीम रूप धरि असुर सँहारे रामचंद्र के काज सवाँरे ॥५॥--

--लाय सजीवन लखन जियाए श्री रघुबीर हरषि उर लाए--

--रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई तुम मम प्रिय भरत-हि सम भाई ॥६॥--

--सहस बदन तुम्हरो जस गावै अस कहि श्रीपति कंठ लगावै--

--सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा नारद सारद सहित अहीसा ॥७॥--

--जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते कवि कोविद कहि सके कहाँ ते--

--तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥८॥--

--तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना लंकेश्वर भये सब जग जाना--

--जुग सहस्त्र जोजन पर भानू लील्यो ताहि मधुर फ़ल जानू ॥९॥--

--प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही जलधि लाँघि गए अचरज नाही--

--दुर्गम काज जगत के जेते सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥१०॥--

--राम दुआरे तुम रखवारे होत न आज्ञा बिनु पैसारे--

--सब सुख लहै तुम्हारी सरना तुम रक्षक काहू को डरना ॥११॥--

--आपन तेज सम्हारो आपै तीनों लोक हाँक ते काँपै--

--भूत पिशाच निकट नहि आवै महाबीर जब नाम सुनावै ॥१२॥--

--नासै रोग हरे सब पीरा जपत निरंतर हनुमत बीरा--

--संकट ते हनुमान छुडावै मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥१३॥--

--सब पर राम तपस्वी राजा तिनके काज सकल तुम साजा--

--और मनोरथ जो कोई लावै सोइ अमित जीवन फल पावै ॥१४॥--

--चारों जुग परताप तुम्हारा है परसिद्ध जगत उजियारा--

--साधु संत के तुम रखवारे असुर निकंदन राम दुलारे ॥१५॥--

--अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता अस बर दीन जानकी माता--

--राम रसायन तुम्हरे पासा सदा रहो रघुपति के दासा ॥१६॥--

--तुम्हरे भजन राम को पावै जनम जनम के दुख बिसरावै--

--अंतकाल रघुवरपुर जाई जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥१७॥--

--और देवता चित्त ना धरई हनुमत सेई सर्व सुख करई--

--संकट कटै मिटै सब पीरा जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥१८॥--

--जै जै जै हनुमान गुसाईं कृपा करहु गुरु देव की नाई--

--जो सत बार पाठ कर कोई छूटहि बंदि महा सुख होई ॥१९॥--

--जो यह पढ़े हनुमान चालीसा होय सिद्धि साखी गौरीसा--

--तुलसीदास सदा हरि चेरा कीजै नाथ हृदय मँह डेरा ॥२०॥--